रामानुजन कॉलेज

शिक्षण अध्ययन केंद्र

(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त)

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

आरमापुर पी.जी. कॉलेज, अरमापुर इस्टेट

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय ,कानपुर

और

माउंट कार्मल कॉलेज, स्वायत्त ,बेंगलुरु

के संयुक्त तत्वावधान में

साहित्य, भाषा ,समाज, राजनीति और दर्शन:अंतर्विषयक संदर्भ

अंतर्विषयक संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम

(26 दिसंबर 2020 - 09 जनवरी 2021)

पंजीकरण एवं प्रतिभागिता हेतु आमंत्रण

द्विसाप्ताहिक ऑनलाइन संकाय संवर्द्धन

(पुनश्चर्या कार्यक्रम के समकक्ष)

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण अध्ययन केंद्र)

संकल्पना और उद्देश्य

साहित्य, भाषा ,समाज, राजनीति और दर्शन : अंतर्विषयक संदर्भ

मानवीय संबंधों की तरह ज्ञान-विज्ञान एवं विभिन्न अनुशासनों के मध्य अनेक संबंध पाए जाते हैं।अंतर्विषयक संबंध से तात्पर्य है दो या दो से अधिक विषयों का मिश्रित एवं पारस्परिक अध्ययन करना। अतः जब हम अंतर्विषयक संदर्भ में साहित्य को देखते हैं तो पाते हैं कि साहित्य में समाज , दर्शन , भाषा और राजनीति के तंतु परस्पर अनुस्यूत हैं।यदि साहित्य के स्वरूप पर विचार किया जाए तो अन्ततः यही बिंदु उभरकर सामने आएगा कि साहित्य उस रचना को कहते हैं जो लोक मंगल का विधान करती है। सामाजिक दृष्टि से साहित्य में जीवन की अभिव्यक्ति किसी न किसी रूप में अवश्य होती हैं।

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध है। समाज का पूरा प्रतिबिम्ब हमें तत्कालीन साहित्य में दिखाई पड़ता है। जनमानस मे व्याप्त, आशा-निराशा, सुख-दुख, उत्साह, हताशा जैसे भाव साहित्य को प्रभावित करते हैं तथा इन्ही से इसका स्वरूप निर्धारण भी होता है। इसी प्रकार दर्शन पर विचार करें तो पाते हैं कि दर्शन का सामान्य अर्थ है- देखना या जानना । एक तरह से दर्शनशास्त्र सत्य के संधान का शास्त्र है।इसे विचारों की जननी कहा जाता है।दर्शन का आरंभ वेदों से होता है और वेद ही साहित्य, संस्कृति, तथा दर्शन, सभी के मूल स्रोत हैं।दर्शन का उद्देश्य जीवन को प्रमाण और तर्कों के सहारे ज्योतित करना है। साहित्य का भी यही ध्येय है । संसार में करणीय- अकरणीय क्या है, इसका उद्बोधन साहित्य ही करता है।साहित्य में ही दर्शन, संस्कृति, एवं समाज का पूर्ण प्रतिबिम्बन होता है , किसी भी समाज की वास्तविक पहचान उसके साहित्य से होती है। दूसरी ओर, समाज की चित्तवृत्ति के अनुरूप ही साहित्य का निर्माण होता है। साहित्य राजनीति से भी अछूता नहीं रह सकता।राजनीति समाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है।भाषा की बात की जाए तो इसके बगैर तो सभी विषय अधूरे हैं। विचारों का आदान-प्रदान करना हो या ज्ञान की सामग्री को लिपिबद्ध करना हो, भाषा एक महत्वपूर्ण उपकरण है।

वर्तमान परिदृश्य में साहित्य के साथ भाषा, समाज, राजनीति और दर्शन के विविध आयामों की पड़ताल आज पहले से अधिक आवश्यक हो गई है।इसी दिशा में इस द्विसाप्ताहिक संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम का क्रियान्वयन संकल्पित है।

संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम के प्रमुख विचारणीय बिंदु :-

1.वैश्वीकरण की दौड़ में भाषा एवं साहित्य का बदलता स्वरूप।

2.लोकतंत्र में भाषा एवं संस्कृति की भूमिका।

3.लैंगिक समानता के प्रश्न : साहित्य एवं राजनीति।

4.साहित्य और भाषा : रोजगार की संभावनाएं।

5. भारतीय समाज पर साहित्य, दर्शन एवं राजनीति के प्रभाव ।

6. हाशिये का समाज और साहित्य।

7. साहित्यिक पृष्ठभूमि में भाषा और राजनीति के अंतर्संबंध।

8. वर्तमान राजनीति और दर्शन : बदलते परिप्रेक्ष्य

9.राजनीति और दर्शनशास्त्र : नवीन आयाम

10.साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि

11.भाषा, साहित्य और राजनीति : पूरकता के प्रश्न।

12.नई शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत साहित्य एवं भाषा पर पुनर्विचार।

13. साहित्य की भाषा और भाषा का साहित्य।

14. साहित्य एवं भाषा शिक्षण में तकनीक की उपादेयता

15. वर्तमान परिदृश्य में साहित्य, सिनेमा और राजनीति

श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय : एक संक्षिप्त परिचय

पांच सौ छात्राओं और छ: विषयों के साथ 1 अगस्त 1969 को दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा एक नयी संस्था का आरम्भ किया गया, जिसका नाम देश के प्रख्यात विचारक एवं शिक्षाविद् डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नाम पर रखा गया – श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय | टैगोर गार्डन के एक स्कूल की इमारत में शुरू इस संस्था की आरम्भिक व्यवस्था दिल्ली प्रशासन के शिक्षा विभाग की उच्चाधिकारी डॉ. नंदा ने संभाली | 1969 के द्वितीय सत्र में डॉ. कमला संघी ने पहली प्राचार्य के रूप में पदभार ग्रहण किया, जिनकी कार्य-कुशलता एवं अथक प्रयासों से नवीन लक्ष्य संधान हुए | विगत वर्ष महाविद्यालय ने पांच दशकों की सुदीर्घ यात्रा के एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में स्वर्ण जयंती उत्सव मनाया |

10 अक्तूबर 1982 को यह पंजाबी बाग स्थित अपने नए भवन में आ गया, जिसका उद्घाटन भारत सरकार की तत्कालीन शिक्षा, संस्कृति एवं समाज कल्याण राज्यमंत्री श्रीमती शीला कौल के कर-कमलों से संपन्न हुआ |

आज महाविद्यालय-परिसर का विस्तार लगभग दस एकड़ में है, जिसमें दो अकादमिक ब्लॉक, शताधिक शिक्षण-कक्ष, नौ प्रयोगशालाएँ, चार संगोष्ठी-कक्ष, एक श्रव्य-दृश्य कक्ष एवं 1150 प्रेक्षकों की क्षमता वाला अत्याआधुनिक वातानुकूलित भव्य राजीव गाँधी सभागार स्थित हैं| हमारे पास एक तिमंजिला, पूर्णतः डिजिटल पुस्तकालय है, जिसमे प्रायः 87,000 पुस्तकों एवं जर्नल्स का संकलन है| अनेक समाचार-पत्र एवं पत्र-पत्रिकाएं मगवायी जाती हैं, अधिसंख्य ऑनलाइन जर्नलस हैं, दृष्टि-बाधित छात्राओं के लिए ब्रेल में किताबों का अच्छा संग्रह है, वातानुकूलित वाचन-कक्ष निर्मित हैं | प्रत्येक विभाग के संकाय-सदस्यों हेतु विभागीय-कक्ष समेत कॉलेज में एक सुसज्जित कॉमन स्टाफ-रूम, एक कॉमन-रूम, छात्राओं के लिए एक बहु-उद्देशीय एक्टिविटी रूम, एक विस्तृत कैंटीन, औषधीय वनस्पतियों वाले हर्बल गार्डन समेत अनेक सुरचित तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत बाग-बगीचे हैं | इन

बागानों के संयोजन में अनेक संकाय-सदस्यों का अविस्मरणीय योगदान रहा है | इनमें स्वर्गीया डॉ. सिंघल एवं श्रीमती पुनीता कपूर के नाम हम अत्यंत स्नेह से लेते हैं | भले ही वे आज हमारे बीच नहीं, पर बाग़ की पत्ती-पत्ती, बूटा-बूटा उनकी स्मृतियों को संजोए है | महाविद्यालय में स्टाफ क्वार्टर्स, इंडियन ओवरसीज बैंक की एक शाखा, एक ए.टी.एम, एक बुक-शॉप तथा फोटोकॉपी-शॉप भी हैं |

महाविद्यालय में उल्लेखनीय खेल-सुविधाएँ हैं | हमारे पास एक इनडोर एवं आउटडोर जिम, योग एवं एरोबिक्स अभ्यास हेतु एक विशाल फ़ोयर , एक बास्केटबाल तथा वॉलीबॉल कोर्ट, खो-खो, कबड्डी एवं हॉकी के मैदान, अटैच बाथरूम वाले अनेक चेंजिंग रूम एवं खेल-कक्ष हैं |

वर्तमान में महाविद्यालय तीन प्रोफेशनल कोर्सेस (कंप्यूटर साइंस का स्व-वित्तपोषित कोर्स, बी.एल.एड तथा बी.एड कोर्स) समेत उन्नीस अनुशासनों में शिक्षा प्रदान कर रहा है | छात्राओं को रोजगारपरक कौशल प्रदान करने की दृष्टि से पांच एड-ऑन कोर्स भी चलाये जाते हैं तथा उनके सर्वांगीण विकास हेतु यू.जी.सी की ग्यारहवीं योजना मे अनुमोदित "Epoch Making Social Thinkers of Modern India" कार्यक्रम के अंतर्गत गाँधी, बुद्ध, गुरुनानक एवं नेहरु स्टडी सेंटर्स की शुरुआत भी की गई|हमारा महाविद्यालय NCWEB का एक प्रतिष्ठित केंद्र है |

महाविद्यालय की सतत् एवं प्रभावी विकास-यात्रा के पीछे सभी प्राचार्य-गण – डॉ.संघी, डॉ. उर्मिला गुप्ता, डॉ. उषा भटनागर, डॉ. सुरजीत कौर जौली, डॉ. नीता कुमा एवं डॉ. साधना शर्मा के सतत प्रयासों, प्रशासनिक सूझ-बूझ और परिश्रम की दास्तान छिपी है | संकाय-सदस्यों और प्रशासनिक कर्मियों की निष्ठा तथा संस्थान की छात्राओं की लगन एवं हुनर ने इसका रूपाकार गढ़ा है |

किसी भी संस्था का परिचय केवल उसकी अकादमिक उपलब्धियों से ही नहीं, बल्कि उसकी शिराओं में प्रवहमान नैतिक एवं मानवीय मूल्यों से भी प्राप्त होता है | हमारा ध्येय है – स्त्री-सशक्तिकरण | समाज के विविध वर्गों की नवयुवतियों के समग्र उत्थान हेतु महाविद्यालय में "संबल" नामक एक सामान अवसर प्रकोष्ठ है, जिसकी तीन इकाइयाँ – "समर्थ" (जरूरतमंद छात्राओं की वित्तीय सहायता हेतु), "समता" (दिव्यांग छात्राओं के सशक्तिकरण हेतु) एवं "चेतना" (अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं पूर्वोत्तर की छात्राओं के समेकित विकास हेतु) कार्यरत हैं| संकाय और छात्र-वर्ग के मानस-क्षितिज का विस्तार करने के विचार से समय-समय पर अनेक कार्यशालाएं, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ, वेब-गोष्ठियां, संवाद, संकाय संवर्धन कार्यक्रम आदि आयोजित किये जाते हैं| विगत पांच दशकों की यात्रा के दौरान विविध अवसरों पर अनेक गणमान्य अतिथियों एवं बुद्धिजीवी मनीषियों का सान्निध्य हमें प्राप्त हुआ | इस सन्दर्भ में हम श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्रीमती शीला दीक्षित, श्री अर्जुन सिंह, श्री पी. चिदंबरम, श्रीमती सोनिया गाँधी, माननीय श्री प्रणव मुखर्जी, श्री यशवंत सिन्हा आदि का नाम बड़े सम्मान से लेते हैं |

'तेजस्वि नावधीतमस्तु' के ध्येय को लेकर गिनती की प्राध्यापिकाओं, थोड़े से कर्मचारियों और सीमित संसाधनों के साथ शुरू हुआ यह कारवां अनेक मंजिलें पार कर आज एक नई दहलीज पर खड़ा है ...अनंत संभावनाएं अपने भीतर समेटे हुए

माउंट कार्मल कॉलेज : एक संक्षिप्त परिचय

माउंट कार्मल कॉलेज की स्थापना वर्ष १९४८ में हुई। बंगलौर की यह अद्वितीय महिला महाविद्यालय है। स्नातक पूर्व तथा स्नातकोत्तर कार्यक्रम के अंतर्गत कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के विषय में ४४ विभाग इस महाविद्यालय में गतिशील है। अनुसंधान के क्षेत्र में भी इस महाविद्यालय का योग दान विश्वभर में वर्षों से चर्चित होता चला आ रहा है। खेल, अभिनय, व्यवसाय, संचार आदि क्षेत्रों में माउंट कार्मल कॉलेज ने कई प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व को तैयार किया है उनमें से प्रमुख किरण मजूमदार शॉ, दीपिका पादुकोण, अनुष्का शर्मा, आदि। हर साल लगभग ३,००० से ४,००० विद्यार्थी इस कॉलेज में दाखिला लेती है। India today के रैंकिंग के अनुसार MCC हर साल देश के प्रथम २० महाविद्यालयों में अपना स्थान कायम रखा है। हिंदी विभाग की स्थापना भी सन १९४८ को हुई। हिंदी विभाग की संस्थापिका डॉ सिस्टर क्लेमेंट मेरी है। अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए आप प्रसिद्ध रही।

आज भी हिंदी विभाग की विशेषता यह है कि अहिंदी राज्य कर्नाटक में हिंदी भाषा को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ने वाली विद्यार्थियों की संख्या सबसे अधिक है। हर साल लगभग २,००० विद्यार्थी हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ते हैं। पाठ्यक्रम का नवीनीकरण एवं बदलते युग के साथ विद्यार्थियों को भारतीय भाषाओं के प्रति उत्साह के साथ आगे बढ़ने के लिए हिंदी विभाग प्रयत्नशील है। उच्च कोटि के शिक्षक के निर्माण में भी विभाग कार्यरत है NAAC में अबतक हुए चार साइकिल में A+ ग्रेड प्राप्त किया है।

अनुसंधान के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण परियोजनाएं प्रति वर्ष संपन्न होते है। महिला सशक्तिकरण की आधारशिला पर स्थित यह महाविद्यालय पिछले ७२ वर्षों से अपने उद्देश्य पर खड़ा उतरा है।

आरमापुर पीजी कॉलेज, अरमापुर इस्टेट ,कानपुर : एक संक्षिप्त परिचय

वस्तुतः शिक्षा व्यक्तित्व के विकास की आधारशिला है। एक श्रेष्ठ विद्या मंदिर ही इस लक्ष्य को पूर्ण कर सकता है यही भाव इस महाविद्यालय की स्थापना के मूल में समाहित है। अरमापुर इस्टेट एवं इससे संबद्ध ग्रामीण अंचलों के छात्र छात्राओं हेतु उच्च शिक्षा की समस्या को दूर करने के उद्देश्य से 23 अगस्त सन 1977 में आयुध निर्माणी के तत्कालीन महाप्रबंधक श्री जे बी सक्सेना जी ने इस महाविद्यालय की आधारशिला रखी। महाविद्यालय का कानपुर विश्वविद्यालय से संबंद्ध 1978 में हुआ। यह महाविद्यालय अरमापुर इस्टेट के अंतर्गत कालपी रोड पर स्थित है।

रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के कर्मठ एवं दूरदृष्टि अधिकारियों (वरिष्ठ महाप्रबंधक आयुध निर्माणी महाप्रबंधक लघु शस्त्र निर्माणी एवं महाप्रबंधक फील्ड गन फैक्ट्री) के कुशल संरक्षण एवं दिशा निर्देशन में महाविद्यालय संचालित है महाविद्यालय को नवीन शिक्षण पद्धतियों एवं तकनीकी से सुसज्जित किया जा रहा है जिसमें यह कॉलेज के मोनोग्राम में अंकित वैदिक मंत्र "ज्योतिषां "ज्योतिरेकम् की सार्थकता को सिद्ध कर सके। महाविद्यालय में क्रीड़ा प्रांगण प्रतियोगिताओं हेतु आदर्श मानकों से सुसज्जित क्रियान्वित की सुविधा है।

महाविद्यालय में नवीन संसाधनों और ऑडियो विजुअल एवं ई क्लास से संपन्न शिक्षण व्यवस्था है। महाविद्यालय में शोध कार्य की सुविधा है इस दृष्टि से महाविद्यालय में शिक्षकों के निर्देशन में शोध कार्य

संपन्न किए जाते हैं। शोध छात्रों हेतु महाविद्यालय में संदर्भ ग्रंथों से सुसज्जित पुस्तकालय वाचनालय एवं शोध कक्ष की वांछित सुविधाओं का विस्तार किया गया है ।

महाविद्यालय में छात्र छात्राओं के पाठ्येतर गतिविधियों हेतु उत्कर्षिणी नामक एक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक मंच की स्थापना की गई है ।उत्कर्ष का भाव है प्रगति पथ पर आगे बढ़ना निरंतर विकास वेदिका पथिक बनकर श्रेष्ठ कार्य संपादित करना। यह मंच कॉलेज के उदीयमान छात्र-छात्राओं की प्रतिभा को दूर गामी बनाने हेतु निरंतर प्रयास कर रहा है। जिसका परिणाम लगातार 2017 ,2018 में स्वर्ण पदक की उपलब्धि है। महाविद्यालय में विभिन्न पाठ्य सहगामी एवं पाठ्य गतिविधियों जैसे एनसीसी, एन एस एस, एनसीसी एयर विंग ,पर्यावरण संरक्षण ,आपदा प्रबंधन, नागरिक सुरक्षा, रोवर्स रेंजर्स ,करियर काउंसलिंग एवं सेवायोजन प्राचीन छात्र परिषद शिक्षक अभिभावक समागम आदि प्रकोष्ठों का गठन किया गया है । महाविद्यालय में छात्र छात्राओं के लिए नवीन आकर्षक कंप्यूटर लैब से सज्जित कंप्यूटर प्रशिक्षण की व्यवस्था है। महाविद्यालय में छात्र छात्राओं के स्तर उन्नयन हेतु मासिक मूल्यांकन सेमिनार एवं कमजोर विद्यार्थियों के लिए प्रथक से ट्यूटोरियल एवं रेमेडियल कक्षाओं की व्यवस्था है। हमारा लक्ष्य -(ज्योतिषां ज्योति रेकम्)

महाविद्यालय का लक्ष्य इससे मोनोग्राम में अंकित है यह आदर्श वाक्य शुक्ल यजुर्वेद के 34 वें अध्याय की प्रथम कंडिका*(शिव संकल्प- सूक्त) से चयनित है जिसका आशय है विद्या के विस्तार से संलग्न विभिन्न ज्योतिपुंज स्वरूप विद्या मंदिरों के मध्य यह अरमापुर महाविद्यालय ज्योतिष मान विद्या मंदिर है हमारा विद्या मंदिर सूर्य की किरणों के समान ओजस्विता धारण करेगा और उच्च शिक्षा के माध्यम से अज्ञान तिमिर को दूर करने की चेष्टा करेगा अपने प्रभावी सद प्रयासों से यह विशेषता का व्यंजक आदर्श महाविद्यालय बने यही हमारी कामना एवं भावना है।

शिक्षण अध्ययन केंद्र, रामानुजन कॉलेज

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 2017 में पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन आरंभ किया। इस मिशन का एक मुख्य उद्देश्य हमारे देश में उच्च शिक्षा की विभिन्न संस्थाओं में शिक्षक अध्ययन केंद्रों की स्थापना कर शिक्षकों के प्रशिक्षण में सहायता प्रदान करना है। शिक्षण अध्ययन केंद्रों का कार्य अध्यापन संबंधी नए तरीकों, विषय विशेष के लिए पाठ्यक्रम तैयार करने और कॉलेजों तथा स्नातकोत्तर विभागों में शिक्षकों द्वारा प्रयोग हेतु नई अध्ययन सामग्री (ई-सामग्री समेत) तैयार करने की पद्धति लगातार सीखने को बढ़ावा देना है। विचार यह है कि शिक्षण अध्ययन केंद्र के माध्यम से स्वतंत्र

आलोचनात्मक एवं रचनात्मक सोच को बढ़ावा देकर तथा विषय विशेष की वृद्धि के लिए शोध में सहायता प्रदान कर शिक्षण अध्ययन की प्रक्रिया को संवर्द्धित करेंगे।

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं मिशन शिक्षक की भूमिका एवं कामकाज को केवल जानकारी एवं ज्ञान का प्रसार करने वाले तक सीमित नहीं करना चाहता बल्कि छात्रों में गुणात्मक, विश्लेषणात्मक कौशल, सूचना सृजित करने की क्षमताएं विकसित करने तथा खुले स्रोतों एवं वैश्विक स्तर की डिजिटलीकृत प्रक्रियाओं के जरिये स्वयं को सशक्त बनाने में उनकी मदद करने वाला बनाना चाहता है। वैयक्तिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए केवल 'क्या पढ़ाया गया' पर जोर नहीं है बल्कि 'किस तरह पढ़ाया गया है' पर ध्यान दिया जा रहा है, जो अंत में भावी पीढ़ियों के काम करने तथा जीवन जीने के तरीके को परिभाषित करेगा।

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन उच्च शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि तथा शिक्षकों और शोधार्थियों के बहुआयामी विकास के लिए संकल्पित है । इस संकल्प की पूर्ति हेतु इस संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है । बदलते परिदृश्य में शिक्षक को अध्यापन की दृष्टि से तैयार करना और उसे अध्ययन-अध्यापन की अद्यतन जानकारी देना तथा शिक्षण प्रक्रिया को सहज बनाना, उच्च शिक्षा को उन्नत करना, शोधार्थियों में शोध की दृष्टि को विकसित करना तथा नवाचार को बढ़ावा देना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है । इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ही दिल्ली विश्वविद्यालय के रामानुजन कॉलेज का शिक्षण अध्ययन केंद्र देश में उच्च शिक्षा के शोधार्थियों तथा शिक्षकों के लिए 26 दिसंबर 2020 - 09 जनवरी 2021 तक ' साहित्य, भाषा ,समाज, राजनीति और दर्शन : अंतर्विषयक विषय पर अंतर-विषयक ऑनलाइन साप्ताहिक संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम आयोजित कर रहा है । वर्तमान परिस्थितियों में कोविड-19 महामारी के चलते शिक्षा को सुचारु रूप से कैसे विद्यार्थों तक पहुंचाया जाए और शोध के कार्यों को कैसे किया जाए ? ये प्रश्न चुनौती के रूप में शिक्षक के समक्ष हैं । बदलते परिदृश्य में शिक्षक समाज अपने विद्यार्थियों से गूगल कक्षा, व्हाट्सप्प, ज़ूम, वीडियो कॉनफेरंसिंग के माध्यम से जुड़ रहे हैं । ऐसी विषम परिस्थितियों में ऑनलाइन कार्यक्रम और कक्षाएँ ही विकल्प हैं । इसी बात को ध्यान में रखते हुए यह ऑनलाइन संकाय संवर्धन कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है ।

सहभागिता हेतु दिशा-निर्देश:-

- संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम में भारत के किसी भी विश्वविद्यालय/कॉलेज के संकाय सदस्य (नियमित/तदर्थ/अस्थायी) एवं शोधार्थी भाग ले सकते हैं।

- सभी प्रतिभागियों का पंजीकरण अनिवार्य है। प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे २६ दिसंबर 2020, सायं ५ बजे तक निम्न लिंक की सहायता से ऑनलाइन पंजीकरण करा लें। https://forms.gle/9r2Skhn3y9ujhEMF8
- संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम में सहभागिता के लिए पंजीकरण शुल्क ₹-860/- का भुगतान करना होगा जो किसी भी स्थिति में वापिस नहीं किया जायेगा|

पंजीकरण शुल्क भुगतान हेतु बैंक खाते का विवरण निम्न प्रकार है :–

- पंजीकरण शुल्क ₹-860/- (शुल्क का भुगतान UPI/NEFT द्वारा निम्न खाते में करना है)

Bank: ICICI Bank

Branch: CR Park Branch, New Delhi - 110019

A/c Name: PRINCIPAL RAMANUJAN COLLEGE

A/c no: 072001003912

IFSC: ICIC0000720

महत्वपूर्ण:

- सभी प्रश्नोत्तरी और असाइनमेंट जमा करना अनिवार्य हैं ।
- सहभागी को प्रमाण पत्र पाने के लिए न्यूनतम 50 % स्कोर करने होंगे।
- प्रदर्शन के आधार पर श्रेणीकृत प्रमाणपत्र प्रतिभागियों को प्रदान किया जाएगा।
- प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए प्रतिभागियों का सभी सत्रों में उपस्थित रहना अनिवार्य है।
- प्रतिभागियों के लिए प्रतिदिन दिए गए कार्यो को करना अनिवार्य होगा ।
- प्रत्येक सहभागी को असाइनमेंट के रूप में एक शोधपत्र और पुस्तक समीक्षा जमा कराना भी आवश्यक होगा जिसके बाद ही प्रमाणपत्र दिया जायेगा।
- सभी प्रतिभागियों को प्रत्येक सत्र के लिए विषयवार ऑनलाइन प्रतिपुष्टि भेजनी होगी।
- संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम मानव संसाधन विकास मंत्रालय की प्रतिष्ठित पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन योजना के अंतर्गत आयोजित जा रहा है, इसलिए हम ऐसे इच्छुक एवं गंभीर प्रतिभागियों को सर्वाधिक महत्व देते हैं, जो सीखने के लिए

उत्सुक हैं। इसलिए ध्यान रखा जाए कि प्रमाणपत्र उन्हीं प्रतिभागियों को दिए जाएंगे, जो संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम के प्रत्येक सत्र में उपस्थित और संलग्न रहेंगे । अतः प्रतिभागिता का प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए प्रतिभागियों का सभी सत्रों में उपस्थित रहना अनिवार्य है।

- **इस संकाय संवर्धन कार्यक्रम के संपूर्ण सत्र हिंदी भाषा में होंगे** ।
- संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम से सम्बंधित समय-समय पर दिए जाने वाले दिशा-निर्देशों का पालन करना अनिवार्य होगा|

सलाहकार समिति	
प्रो. दिनेश सिंह **पूर्व कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय**	
प्रो. अनुला मौर्य, कुलपति **जगद्गुरु रामानंदाचार्य संस्कृत राजस्थान विश्वविद्यालय**	
प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय, **मुंबई विश्वविद्यालय**	
प्रो.प्रकाश नारायण, **व्यस्क एवं सतत शिक्षा विभाग** **और विस्तार, दिल्ली विश्वविद्यालय**	
डॉ. सुधांशु कुमार शुक्ल **चेयर हिंदी , आईसीसीआर** **वारसॉ यूनिवर्सिटी पोलैंड**	
प्रो.राम सजन पांडेय **कुलपति , बाबा मस्त नाथ विश्वविद्यालय,** **रोहतक**	

आयोजक मण्डल

डॉ. एस.पी.अग्रवाल , प्राचार्य, निदेशक, शिक्षण अध्ययन केंद्र, रामानुजन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय	
डॉ. साधना शर्मा, प्राचार्या, निदेशक, संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम श्यामा प्रसाद मुखर्जी कॉलेज फॉर विमेन दिल्ली विश्वविद्यालय	
डॉ. गायत्री सिंह, प्राचार्या, अर्मापुर पी.जी. कॉलेज, डीन ऑफ आर्ट्स फैकल्टी सी.एस.जे.एम. विश्वविद्यालय, कानपुर	
डॉ. सिस्टर अर्पणा प्राचार्या ,माउंट कार्मल कॉलेज,स्वायत्त, बेंगलुरू	

If any query please mail us: fdprama6@gmail.com

If any query please call us:

MN: 09035042342, MN: 09451192905 ,MN:9540572211,

MN:9868342405, MN:9999473856